बदली माना बदली --- कम्प्लीटबुक

बापदादा का ऑडर होना ही है --- २७ ०२ १९८६ ---

एवररेडी

अंतिम पेपर का क्वेश्चन ही यह आना है -

नष्टोमोहा स्मुर्तीस्वरूप - ४ १२ १९९१

बदली माना बदली ----- १८ ०१ १९८६ ----

अभी लक्ष्य रखो पहले बेहद के वैराग्य और

अभी एवररेडी ग्रुप बनाओ ---- २५ १० २००९ -

-

बापदादा के कह दिया है की अचानक किसी भी समय आपका फाइनल पेपर होगा ---

बापदादा भी बताएंगे नहीं ---- १५ ११ २००९ --

-- एवररेडी होना !!!!!!

१ ---- निमित है --- जो मिला जैसे मिला जहाँ बिठाएंगे जो खिलाएंगे जो कराएँगे वही करेंगे ----

ये पहला पहला सभी का वायदा है --- ५ १२ ९४ ---

<u>बदली की इस बुक में बापदादा ने</u>

३६ बार अचानक ---

८७ बार एवररेडी ---

२० बार पेपर ---

२७ बार ऑडर ----

७ बार पास विद ऑनर ----

६ बार धर्मराज ---

११ बार नष्टोमोहा शब्द का उँच्चारण किया है ----

और एवररेडी रहने में निचे की २८ बातें सोने की महीन जंजीर सेकंड में छोड़ने को कहा है ----- जिनकी लिस्ट यहाँ लिखी है ---- जिनको बार बारे पढ़ने से आत्मा को एवररेडी रहें का पुरुषार्थ अच्छा रहेगा ---- और अचानक होनेवाले बदली के फाइनल पेपर में पास बनेगे ---- मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है

---

१ - मेरा सेंटर नहीं बाबा का सेंटर ----

२ - मेरे स्टूडेंट नहीं बाबा के स्टूडेंट ----

३ - मेरे जिज्ञासु नहीं बाबा के जिज्ञासु ----

४ - मेरे मददगार नहीं बाबा के मददगार ----

५ - मेरे अनन्य नहीं बाबा के अनन्य ----

६ मेरे सेवा साथी नहीं बाबा के सेवा साथी

७ - मेरे रिश्ते नहि बाबा के रिश्ते ----

८ - मेरी एरिया नहीं बाबा की एरिया ---

९ - मेरा यही स्थान नहीं बाबा का स्थान ---

१० - मेरा नया मकान नहीं बाबा का नया मकान ---

११ - मेरे बहुत सेंटर्स नहीं बाबा के बहुत सेंटर्स ----

१२ - मेरी चीज वस्तु नहीं बाबा की चीज वस्तु ----

१३ - मेरे सर्व साधन नहीं बाबा के सर्व साधन - ---

१४ - मेरी मदोगरी नहीं बाबा की मदोगरी ----

१५ -- मेरी ड्यूटी नहीं बाबा की ड्यूटी ----

१६ - मेरा ही काम - नहीं बाबा का काम

१७ - मेरी जिम्मवारी - नहीं बाबा की जिम्मेवारी

१८ - मेरा दफ्तर नहीं बाबा का दफ्तर ----

१९ - मेरा ही अधिकार नहीं बाबा का अधिकार

२० - मेरा कमरा नहीं बाबा का कमरा

२१ - मेरी खटिया नहीं बाबा की खटिया ----

२२ - मेरी अलमारी नहीं बाबा की अलमारी ---

२३ - मेरी विशेषता नहीं बाबा की विशेषता ---

२४ मेरे गुण नहीं बाबा के गुण ----

२५ - मेरी सेवा नहीं बाबा की सेवा ---

२६ मैं ही कर रहा हूँ नहीं बाबा ही करा रहा है ---

-

२७ - मेरी टीचर नहीं बाबा की टीचर ----

२८ मेरा शरीर नहीं बाबा का शरीर ---

साथ साथ मेरास्वभाव मेरासंस्कार मेरीरहनसहन मेरीआदत आराम से रहना - आराम से खाना -- और आराम से चलना - ये सब भी छोड़ना पड़ेगा ---- इस प्रकार के मेरेपन के बजाय बाबापन आने से बेहद के वैराग्य और उपराम स्थिति का अनुभव होंगे ----- अचानक ऑडर देंगे आ जाओ बस --- ऑडर हुआ और चला - --- इसको कहा जाता है डबल लाइट फ़रिश्ता - ---- १२ १२ १९९८

सर्विस के बंधन से भी निर्बंधन बनो --- २० १२ १९६९

कोई भी डायरेक्शन कभी भी किसी रूप से, कहाँ के लिये भी निकले और कितने समय में भी निकल सकता, एक सेकेण्ड में तैयार होने का डायरेक्शन भी निकल सकता है। तो ऐसे एवररेडी सभी बने हैं? जैसे अशुद्ध प्रवृत्ति को छोड़ने के लिये कोई बात सोची क्या? जेवर, कपड़े, बाल-बच्चे आदि कुछ भी नहीं देखा ना। तो यह जैसे पवित्र प्रवृत्ति है इसमें फिर यह बातें देखने की क्या आवश्यकता है। आगे सिर्फ स्नेह में थे। स्नेह से यह सभी किया। ज्ञान से नहीं। सिर्फ स्नेह ने ऐसा एवररेडी बनाया। अब स्नेह के साथ शक्ति भी है। स्नेह और शक्ति होते हुए भी फिर इसमें एवररेडी बनने में देरी क्यों। जैसे शुरू

में एलान निकला कि सभी को इस घड़ी मैदान में आना है वैसे अब भी रिपीट जरूर होना है लेकिन भिन्न-भिन्न रूप में। ऐसे नहीं कि बापदादा भविष्य को जानकर के आप सभी को एलान देवे और आप इस सर्विस के बन्धन में भी अपने को बांधे हुए रखो। बन्धन होते हुए भी बन्धन में नहीं रहना है। कोई भी आत्मा के बन्धन में आना यह निर्बन्धन की निशानी नहीं है। इसलिए सभी को एक बात पास विद आनर्स की पास करनी है, जो बातें आपके ध्यान में भी नहीं होंगी, स्वप्न में भी नहीं होंगी उन बातों का एलान निकलना है। और ऐसे पेपर में जो पास होंगे वही पास विद आनर्स होंगे। इसलिये पहले से ही सुना रहे हैं। पहले से ही ईशारा मिल रहा

है। इसको कहा जाता है - महीनता में जाना। जो महीन बुद्धि होंगे उनकी विशेषता क्या होगी? महीन बुद्धि वाले कैसी भी परिस्थिति में अपने को मोल्ड कर सकेंगे। जैसी परिस्थिति उसमें अपने को मोल्ड कर सकेंगे। सामना करने का उनमें साहस होगा वह कभी घबरायेंगे नहीं। लेकिन उसकी गहराई में जाकर अपने को उसी रीति चलायेंगे। तो जब हल्के होंगे तब ही मोल्ड हो सकेंगे। नर्म और गर्म दोनों ही होंगे तब मोल्ड होंगे। एक की भी कमी होगी तो मोल्ड नहीं हो सकेंगे। कोई भी चीज़ को गर्म कर नर्म किया जाता है। फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ कौनसी नर्माई और गर्माई है। नर्माई है निर्माणता, गर्माई है - शक्ति रूप। निर्माणता

अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही निर्माणता में रह सकेंगे। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे न नम्रचित। इसलिए निर्माणता और फिर शक्ति रूप अर्थात् जितनी निर्माणता उतना ही - फिर मालिकपना। शक्तिरूप में है मालिकपना और नम्रता में सेवागुण। सेवा भी और मालिकपना भी। सेवाधारी भी हो और विश्व के मालिकपने का नशा भी हो। जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे। हरेक को यह देखना है कि हमारी बुद्धि की तराजू गर्म और नर्म दोनों में एक समान रहती है। कहाँ-कहाँ अति निर्माणता भी नुकसान करती है और कहाँ अति मालिकपना भी नुकसान करता है,

इसलिए दोनों की समानता चाहिए। जितनी समानता होगी उतनी महानता भी। अब समझा कि किस एक बात में पास विद आनर होंगे?

यह फाइनल पेपर का पहले एनाउस कर रहे है। हर समय निर्बन्धन। सर्विस के बन्धन से भी निर्बन्धन। एलान निकले और एवररेडी बन मैदान पर आ पहुँचा। यह फाइनल पेपर है जो समय पर निकलेगा - प्रैक्टिकल में। इस पेपर में अगर पास हो गये तो और कोई बड़ी बात नहीं। इस पेपर में पास होंगे अर्थात् अव्यक्त स्थिति होगी। शरीर के भान से भी परे हुए तो बाकी क्या बड़ी बात है। इससे ही परखेगे कि कहाँ तपन अपने उस जीवन की नईया की रस्सियाँ छोडी है। एक है सोने की जंजीर दूसरी है लोहे की।

लोहे की जंजीर तो छोडी लेकिन अब सोने की भी महीन जंजीर है। यह फिर ऐसी है जो कोई को देखने में भी आ न सके।

लास्ट क्वेश्चन 16 05 73

अभी आप श्रेष्ठ आत्माओं का लास्ट पुरूषार्थ कौन-सा रह गया है? लास्ट स्टेज के लास्ट पेपर के क्वेश्चन को जानते हो? जानने वाला तो ज़रूर पास होगा ना? आप सभी फाईनल (Final) परीक्षा के लास्ट क्वेश्चन को जानते हो? आप का लास्ट क्वेश्चन आपके भक्तों को

भी पता है। वह भी वर्णन करते हैं। आपको भक्त जानते हैं और आप नहीं जानते हो? भक्त आप लोगों से होशियार हो गए हैं क्या? आज श्रेष्ठ आत्माओं के कल्प पहले की रिजल्ट का भक्तों को मालूम है और आप लोगों को अपने वर्तमान पुरूषार्थ के फाईनल स्टेज भूल गई है। वह लास्ट स्टेज बार-बार सुनते हो। गायन भी करते हैं। गीता के भगवान् के द्वारा गीता-ज्ञान सुनने के बाद फाईनल स्टेज कौन-सी वर्णन करते हो? (नष्टोमोहा.....स्मृतिर्लब्धा) भक्त आपकी स्टेज का वर्णन तो करते हैं ना? तो लास्ट पेपर का क्वेश्चन कौन-सा है? स्मृति स्वरूप किस स्टेज तक बने हो और नष्टोमोह:

कहाँ तक बने हो?-यही है लास्ट क्वेश्चन। इस लास्ट क्वेश्चन को पूर्ण रीति से प्रैक्टिकल में करने के लिए यही दो शब्द प्रैक्टिकल में लाने हैं। अभी तो सभी पास विद् ऑनर बन जायेंगे ना? जबकि फाईनल रिजल्ट से पहले ही क्वेश्चन एनाउन्स हो रहा है। फिर भी 108 ही निकलेंगे। इतना मुश्किल है क्या? पहले दिन से यह क्वेश्चन मिलता है। जिस दिन जन्म लिया उस दिन ही लास्ट क्वेश्चन सुनाया जाता है।

नंबरवन एवररेडी ग्रुप 23 06 73

तो अब फास्ट पुरूषार्थ एक सेकेण्ड का ही होना चाहिए। क्योंकि सुनाया था कि लास्ट पेपर की जो रिजल्ट आउट होना है। लास्ट पेपर का समय क्या मिलेगा? एक सेकेण्ड। लास्ट पेपर का टाइम भी फिक्स है और पेपर भी फिक्स है। पेपर सुनाया था ना-नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप। एक सेकेण्ड में ऑर्डर हुआ -- नष्टोमोहा बन जाओ तो एक सेकेण्ड में अगर नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप न बने, अपने को स्वरूप बनाने अर्थात् युद्ध करने में ही समय गंवा दिया और बुद्धि को ठिकाने लगाने में समय लगा दिया तो क्या हो जायेंगे? -फेल। तो समय भी एक सेकेण्ड का मिलना है। यह भी पहले ही सुन रहे हैं। पेपर भी

पहले सुन रहे हैं तो कितने पास होने चाहिये? तीन ग्रुप आउट करने हैं। नम्बर 1 एवररेडी ग्रुप 2 रेडी ग्रुप 3 लेजी ग्रुप। इस छः मास के अन्दर अपने को परिवर्तित कर फर्स्ट ग्रुप में लाना है अर्थात् एवररेडी ग्रुप। ऑर्डर हुआ और किया। ऑर्डर मानने में लेजी नहीं। इन तीन ग्रुप्स में स्वयं भी स्वयं को दर्पण में साक्षात्कार हो जायेगा। जैसे कल्प पहले ब्रह्माकुमार (नारद) ने दर्पण में अपना साक्षात्कार किया ना वैसे नॉलेज रूपी दर्पण में स्वयं ही स्वयं का साक्षात्कार करेंगे कि मैं किस ग्रुप में हूँ और किस ग्रेड में आने वाला हूँ।

बेहद की वैराग्य वृत्ति 25 10 1975

अपने को मास्टर विश्व की शिक्षक समझती हो अथवा अपने-अपने सेवाकेन्द्रों कि मैं फलाने स्थान की टीचर हूँ, यह बुद्धि में रहता है? यह बुद्धि में रहना चाहिए कि मैं विश्व की निमित्त बनी हुई मास्टर विश्व-शिक्षक हूँ! हद याद रहती है या बेहद? बेहद का नशा और बेहद की सेवा के प्लैन चलते हैं या अपने स्थान के प्लैन चलते हैं? बेहद का नशा रहेगा तब विश्व की मालिक बनेंगी। अगर हद का नशा और हद की स्मृति रहती है, तो विश्व के मालिकपन के संस्कार नहीं बनेंगे, फिर तो छोटा-छोटा राजा बनेंगे।जैसे बाप

को देखा एक स्थान मधुबन में रहते चारों ओर के प्लान बनाते थे, न कि सिर्फ मधुबन के। ऐसे ही निमित्त कहाँ भी रहती हो, लेकिन बेहद के प्लैन्स बनाती रहो। ऐसी हैं सब बेहद की बुद्धि वाली टीचर्स? चारों ओर चक्कर लगाती हो कि सिर्फ अपनी एरिया में चक्कर लगाती हो? जो जितना ईश्वरीय सेवा-अर्थ चक्कर लगाते हैं उतना ही चक्रवर्ती राजा बनते हैं। बेहद की वैराग्य वृत्ति को टीचर्स अपने में अनुभव करती हैं? बेहद की वैराग्य वृत्ति है कि अपने सेन्टर्स व जिज्ञासुओं से लगाव नहीं। जब इस लगाव से बेहद का वैराग्य होगा तब जयजयकार होगी।

सब स्थूल, सूक्ष्म साधनों से बेहद का वैराग्य। ऐसी धरनी बनी है अथवा थोड़ा सेन्टर्स से चेन्ज करें तो हिलेंगी? जिज्ञासुओं पर तरस नहीं पड़ेगा? जरा भी उन्हों के प्रति संकल्प नहीं आयेगा? ऐसे अपने को चेक करना चाहिए कि ऐसा पेपर आये तो नष्टोमोहा हैं? वह है लौकिक सम्बन्ध और यह है सेवा का सम्बन्ध। यदि उस सम्बन्ध में मोह जाये तो आप लोग वाणी चलाती हो। यह अलौकिक सेवा का सम्बन्ध है, इसमें यदि आपका मोह होगा तो आने वाले स्टूडेण्ट्स इस पर वाणी चलायेंगे। तो अपनी महीन रूप से चेकिंग करो कि अभी कोई

ऑर्डर हो तो एवररेडी हैं? इस सेन्टर की सर्विस अच्छी है, तो सर्विस अच्छी से भी लगाव तो नहीं है? जब सबसे उपराम हों तब बेहद की वैराग्य वृत्ति कहेंगे। अपने शरीर से भी उपराम। जैसे कि निमित्त सेवा-अर्थ चलाते हैं।लगाव की निशानी यह है कि बुद्धि बार-बार बाप से हट कर उस तरफ जाये तो समझो लगाव है। अपने आप से भी लगाव न हो। जो अपने में विशेषता है, कोई में हैंडलिंग पॉवर अच्छी है वा कोई में वाणी की पॉवर है तो कहेंगी मैं ऐसी हूँ। परन्तु यह तो बापदादा की देन है। अपने ज्ञान की विशेषता, विशेषता कोई भी हो, उससे भी लगाव नहीं। इसमें भी अभिमान आ जाता है

इससे तो यह बुद्धि में रखो कि - "यह बाप से मिला हुआ वर्सा है। जो सर्व-आत्माओं के प्रति हमें मिला है, जो दे रहे हैं, हम तो निमित्त हैं।" ऐसे बेहद के वैराग्य वृत्ति का संगठन टीचर्स का होना चाहिए। जो चलने से, देखने से और बोलने से सबको महसूस हो कि ये बेहद के वैरागी हैं। ज्ञान से सेवा करने में होशियार हैं, यह तो सब महसूस करते हैं। अब बेहद के वैराग्य का अनुभव करो, जो दूसरे भी अनुभव करें

बाप समान कर्मातीति स्थिति ---- 10 12 79

निमित्त मात्र डायरेक्शन प्रमाण प्रवृत्ति में रह रहे हो, सम्भाल रहे हो लेकिन अभी-अभी आर्डर हो कि चले आओ तो चले आयेंगे या बन्धन आयेगा। सभी स्वतन्त्र हो? बिगुल बजे और भाग आयें। ऐसे नष्टोमोहा हो? ज़रा भी 5% भी अगर मोह की रग होगी तो 5 मिनट देरी लगायेंगे और खत्म हो जायेगा। क्योंकि सोचेंगे, निकलें या न निकलें। तो सोच में ही समय निकल जायेगा। इसलिए सदा अपने को चेक करो कि किसी भी प्रकार का देह का, सम्बन्ध का, वैभवों का बन्धन तो नहीं हैं। जहाँ बन्धन होगा वहाँ आकर्षण होगी। इसलिए बिल्कुल स्वतन्त्र।

इसको ही कहा जाता है - बाप-समान कर्मातीत स्थिति। सभी ऐसे हो ना?

स्थान परिवर्तन के साथ स्थिति परिवर्तन न हो -- - तब कहेंगे एवररेडी 09 01 1980

संस्कार मिलते नहीं, यह भी संकल्प न आये। मिलाने ही हैं। मिलते नहीं, यह कौन बोलता है? यह बदलता नहीं, सुनता नहीं, यह ना-ना या नहीं-नहीं की भाषा किसकी है? अब तो होना ही है। हाँ जी। `ना' शब्द समाप्त। तो सभी हाँहाँ वाले हो ना। अभी बेहद के बनो, हद को

छोड़ो। सुनाया था ना, कोई जोन का भी हेड है तो यह भी हद हुई। नक्शे के अन्दर देखो आपका जोन क्या है? बिन्दी। तो हद हो गई ना। अभी फलाने स्थान के हैं, यह भी नहीं। फलाने स्थान पर ही ठीक हैं, यह भी नहीं। बेहद के मालिक बनना है या एक स्थान का? ऐसा नहीं, थोड़ा-सा स्थान परिवर्तन हो तो स्थिति परिवर्तन हो जाए। अभी भेजेंगे यहाँ वहाँ, तैयार हो? फॉरेन भेजें या किसी भी स्थान पर भेजें लेकिन एवररेडी। देश में भेजें या विदेश में। जब जाना होता है तो शक्ति आपे ही मिल जाती है।

तो कल से सभी को चेन्ज करें? अच्छा - नई बुलेटिन निकालें फिर नहीं कहना अभी तैयार होने के लिए एक साल और दो, सिर्फ 4 मास दो, दो मास दो, ऐसे तो नहीं कहेंगे ना। हिम्मत है? अपना है ही क्या। अगर अपना है तो सब, अपना है, नहीं तो कुछ अपना नहीं। जो बाप का वह अपना। बाप का बेहद है आपका भी बेहद। सब हमारे हैं, इसको कहते हैं बेहद।

लगाव झुकाव से किनारा कर स्वयं को ऑफर करें वाला ही उपराम है ---- 26 04 1982

‘सच्चे नम्बरवन योग्य सेवाधारी'। लक्ष्य तो सभी का ऐसा ही है ना! गुजरात से बहुत सेवाधारी निकले हैं लेकिन गुजरात की नदियाँ गुजरात में ही बह रही हैं, गुजरात कल्याणकारी नहीं, विश्व-कल्याणकारी बनो। सदा एवररेडी रहो। आज कोई भी डायरेक्शन मिले - बोलो, ‘हाँ जी'। क्या होगा कैसे होगा - ट्रस्टी को क्या, कैसे का क्या सोचना। अपनी आफर सदा करो तो सदा उपराम रहेंगे। लगाव झुकाव से किनारा हो जायेगा। आज यहाँ हैं कल कहाँ भी चले जायें तो उपराम हो जायेंगे। अगर समझते, यहाँ ही रहना है तो फिर थोड़ा बनाना है, बनना है...

यह रहेगा। आज यहाँ कल वहाँ। पंछी है आज एक डाल पर, कल दूसरी डाल पर तो स्थिति उपराम रहेगी, तो मन की स्थिति सदा उपराम चाहिए। चाहे कहाँ 20 वर्ष भी रहो लेकिन स्वयं सदा एवररेडी! स्वयं नहीं सोचो कि कैसे होगा! - इसको कहा जाता है महात्यागी।

कर्मातीति अर्थात कर्म के बंधन से न्यारे -----

24 02 1984

टीचर्स के साथ:- सदा सेवाधारी आत्माओं का यह संगठन है ना। सदा अपने को बेहद के विश्व

सेवाधारी समझते हो? हद के सेवाधारी तो नहीं हो ना। सब बेहद के हो? किसी को भी किसी स्थान से किसी भी स्थान पर भेज दें तो तैयार हो? सभी उड़ते पंछी हो? अपने देह के भान की डाली से भी उड़ते पंछी हो या देह के भान की डाली कभी-कभी अपने तरफ खींचती है? सबसे ज्यादा अपने तरफ आकर्षित करने वाले डाली यह देह का भान है। जरा भी पुराने संस्कार, स्वभाव अपने तरफ आकर्षित करते माना देह का भान है। मेरा स्वभाव ऐसा है, मेरा संस्कार ऐसा है, मेरी रहन-सहन ऐसी है, मेरी आदत ऐसी है, यह सब देह भान की निशानी है।

तो इस डाली से उड़ते पंछी हो? इसको ही कहा जाता है - कर्मातीत स्थिति। कोई भी बन्धन नहीं। कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो लेकिन कर्म के बन्धन से न्यारे। तो देह के कर्म, जैसे किसका नेचर होता है - आराम से रहना, आराम से समय पर खाना, चलना यह भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है। इस कर्म के बन्धन अर्थात् आदत से भी परे। क्योंकि निमित्त हो ना।

निमित भाव सफलता की चाबी ---- 19 12 1982

निमित्त भाव सफलता की चाबी है।' जब हद का लौकिक मेरा-पन छोड़ दिया तो फिर और मेरा कहाँ से आया। मेरा के बजाए 'बाबा-बाबा' कहने से सदा सेफ हो जाते। मेरा सेन्टर नहीं बाबा का सेन्टर। मेरा जिज्ञासु नहीं - बाबा का। मेरा खत्म होकर तेरा बन जाता। तेरा कहना अर्थात् उड़ना। तो निमित्त शिक्षक अर्थात् उड़ती कला के एक्जैम्पल। जैसे आप उड़ती कला के एक्जैम्पुल बनते वैसे दूसरे भी बनते हैं। न चाहते भी जिसके निमित्त बनते हो उनमें वह वायब्रेशन स्वत: आ जाते है। तो निमित्त शिक्षक, सेवाधारी सदा न्यारे हैं, सदा प्यारे हैं। कभी भी कोई पेपर आवे तो उसमें पास होने वाले हैं। निश्चयबुद्धि विजयी हैं।

सदा सबकुछ समेटा हुआ हो तब कहेंगे एवररेडी

--- 06 03 1985

टीचर्स सोच रहीं हैं - हम तो पहुँच जायेंगे। यह भी हो सकता है कि आपको वहाँ ही बाप डायरेक्शन दें। वहाँ कोई विशेष कार्य हो। वहाँ कोई औरों को शक्ति देनी हो। साथ ले जाना हो। यह भी होगा लेकिन बाप के डायरेक्शन प्रमाण रहें। मनमत से नहीं। लगाव से नहीं। हाय मेरा सेन्टर; यह याद न आये। फलाना जिज्ञासु भी साथ ले जाउँ, यह अनन्य है, मददगार है। ऐसा

भी नहीं। किसी के लिए भी अगर रूके तो रह जायेंगे। ऐसे तैयार हो ना! इसको कहते हैं एवररेडी। सदा ही सब कुछ समेटा हुआ हो। उस समय समेटने का संकल्प नहीं आवे। यह कर लूँ, यह कर लूँ। साकार में याद है ना - जो सर्विसएबुल बच्चे थे उन्हों की स्थूल बैग बैगेज सदा तैयार होती थी। ट्रेन पहुँचने में 5 मिनट हैं और डायरेक्शन मिलता था कि जाओ। तो बैग बैगेज तैयार रहते थे। एक स्टेशन पहले ट्रेन पहुँच गई है - और वह जा रहे हैं। ऐसे भी अनुभव किया ना। यह भी मन की स्थिति में बैग बैगेज तैयार हो। बाप ने बुलाया और बच्चे जी हाजर हो जाएँ। इसको कहते हैं एवररेडी।

उड़ता पंछी कभी एक डाली पर नहीं बैठता सदा

एवररेडी ----- 04 12 1985

एक ने कहा दूसरे ने माना यह भी श्रेष्ठ कर्म करके दिखाने के निमित्त बनो। क्यों, क्या नहीं किया ना। हाँ जी कर लिया ना। ऐसे ही हल्के सभी बन जाएँ तो फिर क्या होगा? सभी उड़ते पंछी हो जायेंगे। आज यहाँ कल वहाँ। जैसे पंछी कभी किसी डाली पर बैठते, कभी किसी डाली पर बैठते, उड़ते रहते। ऐसे उड़ते पंछी बन जायेंगे। जिस डाली पर बैठे वही घर है। तो ऐसा संस्कार भरना ही है। ऐसा सभी सीख गये हो ना! कभी

भी आर्डर आयेगा तो 'क्या-क्यों' तो नहीं करेंगी ना! जब सेवा स्थान कहते हो तो सेवा स्थान का अर्थ क्या हुआ? कभी भी कोई सेन्टर को घर तो नहीं कहते हैं ना। सेवा स्थान कहते हैं, प्रवृत्ति वालों का घर है लेकिन जो ब्राह्मण बन गये उनके सेवा स्थान हैं। सेवा स्थान अर्थात् सेवा के लिए हैं। तो जहाँ सेवा हैं वहाँ हाजर। घर होगा तो छोड़ने में मुश्किल होगा। सेवा स्थान है तो जहाँ भी सेवा है वह सेवा स्थान है। अच्छा - ऐसे सभी एवररेडी बनो।

नाम ही है विश्व कल्याणकारी ---- 18 01 1986

सभी ने सिल्वर जुबली मनाई! बनना तो गोल्डन एजड है, सिल्वर तो नहीं बनना है ना! गोल्डन एजड बनने के लिए इस वर्ष क्या प्लैन बनाया है? सेवा का प्लैन तो बनाते ही हो लेकिन स्व-परिवर्तन और बेहद का परिवर्तन - उसके लिए क्या प्लैन बनाया है? यह तो अपने-अपने स्थान का प्लैन बनाते हो, यह करेंगे। लेकिन आदि निमित्त हो तो बेहद के प्लैन वाले हो। ऐसे बुद्धि में इमर्ज होता है कि हमें इतने सारे विश्व का कल्याण करना है, यह इमर्ज होता है? या

समझते हो कि यह तो जिनका काम है वही जानें! कभी बेहद का ख्याल आता है या अपने ही स्थानों का ख्याल रहता है? नाम ही है विश्व-कल्याणकारी, फलाने स्थान के कल्याणकारी तो नहीं कहते। लेकिन बेहद सेवा का क्या संकल्प चलता है? बेहद के मालिक बनना हैं ना, स्टेट के मालिक तो नहीं बनना है। सेवाधारी निमित्त आत्माओं में जब यह लहर पैदा हो तब वह लहर औरों में भी पैदा होगी। अगर आप लोगों में यह लहर नहीं होगी तो दूसरों में आ नहीं सकती। तो सदा बेहद के अधिकारी समझ, बेहद का प्लैन बनाओ। पहली मुख्य बात है - किसी भी प्रकार के हद के बन्धन में बंधे हुए तो

नहीं हैं ना! बन्धन मुक्त ही बेहद की सेवा में सफल होंगे।

संस्कार मिलाने से संगठन मजबूत होता है ----

- 18 01 1986

एक दो के समीप आने के लिए समान बनना पड़ेगा। संस्कार भिन्न-भिन्न तो हैं भी और रहेंगे भी। अभी जगदम्बा को देखो और ब्रह्मा को देखो - संस्कार भिन्न-भिन्न ही रहे। अभी जो भी निमित्त दीदी-दादियाँ हैं, संस्कार एक जैसे तो नहीं लेकिन संस्कार मिलाना - यह है स्नेह का सबूत। यह नहीं सोचो कि संस्कार मिलें तो

संगठन हो, यह नहीं। संस्कार मिलाने से संगठन मजबूत बन ही जाता है। अच्छा - यह भी हो ही जायेगा। सेवा एक है लेकिन निमित्त बनना, निमित्त भाव में चलना - यही विशेषता है। यही तो हद निकलनी है ना? इसके लिए सोचा न? तो सबको चेन्ज करें। एक सेन्टर वाले दूसरे सेन्टरों में जाने चाहिए। सभी तैयार हो? आर्डर निकलेगा। आपका तो हैंडसअप हैं ना? बदलने में फायदा भी है। इस वर्ष यह नई बात करें ना। नष्टोमोहा तो होना ही पड़ेगा। जब त्यागी तपस्वी बन गये तो यह क्या है? त्याग ही भाग्य है। तो भाग्य के आगे यह क्या त्याग है! आफर करने

वालों को आफरीन मिल जाती है। तो सभी बहादुर हो! बदली माना बदली। कोई को भी कर सकते हैं। हिम्मत है तो क्या बड़ी बात है। अच्छा तो इस वर्ष यह नवीनता करेंगे। पसन्द हैं ना! जिन्होंने एवररेडी का पाठ आदि से पढ़ा हुआ है उनमें यह भी अन्दर ही अन्दर बल भरा हुआ होता है। कोई भी आज्ञा पालन करने का बल स्वत: ही मिलता है तो सदा आज्ञाकारी बनने का बल मिला हुआ है,

डेट का क्वेश्चन अचानक आएगा इसलिए एवररेडी रहो ---- 27 02 1986

सभी एवररेडी हो ना! आज किसको कहाँ भेजें तो एवररेडी हो ना! जब हिम्मत रखते हैं तो मदद भी मिलती है। एवररेडी जरूर रहना चाहिए। और जब समय ऐसा आयेगा तो फिर आर्डर तो करना ही होगा। बाप द्वारा आर्डर होना ही हैं। कब करेंगे वह डेट नहीं बतायेंगे। डेट बतावें फिर तो सब नम्बर वन पास हो जाएँ। यहाँ डेट का ही 'अचानक' एक ही क्वेश्चन आयेगा! एवररेडी हो ना। कहें यहाँ ही बैठ जाओ तो बाल-बच्चे घर आदि याद आयेगा? सुख के साधन तो वहाँ हैं लेकिन स्वर्ग तो यहाँ बनना है। तो 'सदा एवररेडी रहनाश्। यह हैं ब्राह्मण जीवन की विशेषता। अपनी बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। सेवा के लिए निमित्त मात्र स्थान बाप ने दिया है। तो

निमित्त बनकर सेवा में उपस्थित हुए हो। फिर बाप का इशारा मिला तो कुछ भी सोचने की जरूरत ही नहीं है।वैसे तो सभी ब्राह्मणों के स्थान हैं। अगर कोई नैरोबी जायेंगे वा कहाँ भी जायेंगे तो कहेंगे हमारा सेन्टर, बाबा का सेन्टर है। हमारा परिवार है।

निर्विध्न और मायमुक्त रहना ही सच्ची सेवा है -- -- 03 02 1988

लेकिन सेवा में माया क्यों आती है? इसका मूल कारण दिल का स्नेह नहीं है, परिवार के प्रमाण स्नेह है। लेकिन दिल का स्नेह त्याग की

भावना उत्पन्न करता है। वह न होने के कारण कभी - कभी सेवा माया - रूप बन जाती है और ऐसी सेवा को सेवा के खाते में जमा नहीं कर सकते - चाहे कोई 50 - 60 सेन्टर्स खोलने के भी निमित्त बन जाए! लेकिन सेवा के खाते में या बापदादा की दिल में सेवा का जमा खाता उतना ही होता है जो माया से मुक्त हो, योगयुक्त हो करते हो। किसके पास दो सेन्टर हैं, देखने में दो सेन्टर की इन्चार्ज आती है, और कोई 50 सेन्टर्स की इन्चार्ज दिखाई देती है, लेकिन अगर दो सेवाकेन्द्र भी निर्विघ्न हैं, माया से, हलचल से, स्वभाव - संस्कार के टक्कर के टक्कर से

मुक्त हैं तो दो सेन्टर वाले का भी 50 सेवाकेन्द्र वाले से ज्यादा सेवा का खाता जमा है। इसमें खुश नहीं हो जाओ कि मेरे 30 सेन्टर्स हैं, 40 सेन्टर्स हैं। लेकिन माया से मुक्त कितने सेन्टर्स हैं? सेन्टर भी बढ़ाते जाओ, माया भी बढ़ाते जाओ - ऐसी सेवा बाप के रजिस्टर में जमा नहीं होती है। आप सोचेंगे - हम तो बहुत सेवा कर रहे हैं, दिन - रात नींद भी नहीं करते, खाना भी एक बार बनाके रात को खा लेते - इतना बिजी रहते! लेकिन सेवा के साथ - साथ माया में भी बिजी तो नहीं रहते? यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ, इसने क्यों किया, मैंने क्यों नहीं किया, मेरा

हक, तेरा हक लेकिन बाप का हक कहाँ गया? समझा? सेवा अर्थात् जिसमें स्व के और सर्व के सहयोग वा सन्तुष्टता का फल प्रत्यक्ष दिखाई दे। अगर सर्व की शुभ भावना - शुभ कामना का सहयोग वा सन्तुष्टता प्रत्यक्ष फल के रूप में नहीं प्राप्त होती है तो चेक करो - क्या कारण है, फल क्यों नहीं मिला? और विधि को चेक करके चेन्ज करो।

ऐसी सच्ची सेवा बढ़ाना ही सेवा बढ़ाना है। सिर्फ अपनी दिल खुश नहीं करो कि मैं बहुत अच्छी सेवा कर रही हूँ। लेकिन बाप की दिल

खुश करो और ब्राह्मण परिवार के दिल की दुआयें लो। इसको कहा जाता - 'सच्ची सेवा'।अपने को बेहद के निमित्त सेवाधारी समझते हो? बेहद के सेवाधारी अर्थात् किसी भी मैं - पन के व मेरे पन की हद में आने वाले नहीं। बेहद में न मैं है, न मेरा है। सब बाप का है, मैं भी बाप का तो सेवा भी बाप की। इसको कहते हैं - बेहद सेवा।

एवररेडी रहना है ----- 20 02 1988

यह मधुबन ब्राह्मणों का छोटा - सा संसार है। तो यह संसार बहुत अच्छा लगता है ना। यहाँ से

जाने को दिल नहीं होती है ना। अगर अभी - अभी ऑर्डर कर लें कि मधुबन निवासी बन जाओ, तो खुश होंगे ना! वा यह संकल्प आयेगा कि सेवा कौन करेगा? सेवा के लिए तो जाना ही चाहिए। बापदादा कहे - बैठ जाओ, फिर भी सेवा याद आयेगी? सेवा कराने वाला कौन है? जो बाप का डायरेक्शन हो, श्रीमत हो, उसको उसी रूप में पालन करना - इसको कहते हैं सच्चा आज्ञाकारी बच्चा। बापदादा जानते हैं - मधुबन में बिठाना है वा सेवा पर भेजना है। ब्राह्मण बच्चें को हर बात में एवररेडी रहना है। अभी - अभी जो डायरेक्शन मिले

उसमें एवररेडी रहना। संकल्प मात्र भी मनमत मिक्स न हो। इसको कहते हैं - श्रीमत पर चलने वाली श्रेष्ठ आत्मा।

सच्चा समर्पित वह है जो बुद्धि से समर्पित है --

--- 13 12 1989

सभी टीचर्स की परमानेंट एड्रेस कौनसी है?

मधुबन है ना। वह दुकान हैं, यह घर है। ज्यादा क्या याद रहता है - घर या दुकान? कोई-कोई को दुकान ज्यादा याद रहती है। सोयेंगे तो भी दुकान याद आयेगी। आप लोग जहाँ चाहो बुद्धि को स्थित कर सकते हो। सेवाकेंद्र पर रहते

भी मधुबन निवासी बन सकते और मधुबन में रहते भी सेवाधारी बन सकते हो, यह अभ्यास है ना। सेकण्ड में सोचा और स्थित हुआ, यह है टीचर्स की स्थिति की विशेषता। बुद्धि भी समार्पित है ना या सिर्फ सेवा के लिए समार्पित हो? समार्पित बुद्धि अर्थात् जहाँ चाहें, जब चाहें वहाँ स्थित हो जाएँ। यह विशेषता की निशानी है। बुद्धि सहित समार्पित - ऐसे हो ना या बुद्धि से आधी समार्पित हैं और शरीर से सारी हैं?

मेरे को तेरे में समाने वाल ही सच्चा बादशाह है

---- 20 01 1990

सभी टीचर्स फालो फादर करने वाली हो या मेरा सेंटर, मेरे जिज्ञासू, मेरी मंडोगरी और स्टूडैण्ट भी समझते - मेरी टीचर है? फालो फादर अर्थात् मेरे को तेरे में समाना, हद को बेहद में समाना। अभी इस कदम-पर-कदम रखने की आवश्यकता है। सबके संकल्प, बोल, सेवा की विधि बेहद की अनुभव हो। कहते हो ना - अभी क्या करना है इस वर्ष। तो स्व-परिवर्तन के लिए हर एक को सर्व वंश सहित समाप्त करो। जिसको भी देखो वा जो भी

आपको देखे - बेहद के बादशाह का नशा अनुभव हो। हद की दिल वाले बेहद के बादशाह बन नहीं सकते। ऐसे नहीं समझना कि जितने सेंटर्स खोलते वा जितनी ज्यादा सेवा करते हो इतना बड़ा राजा बनेंगे। इस पर स्वर्ग की प्राइज नहीं मिलनी है। सेवा भी हो, सेंटर्स भी हौ लेकिन हद का नाम-निशान न हो। उसको नम्बरवार विश्व के राज्य का तख्त प्राप्त होगा। इसलिए अभी-अभी थोड़े समय के लिए अपनी दिल खुश करके नहीं बैठना। बेहद की खुशबू वाला बाप समान और समीप अब भी है और २१ जन्म भी ब्रह्मा बाप के समीप होगा। तो ऐसी प्राइज चाहिए या अभी की? बहुत सेंटर्स है,

बहुत जिज्ञासु है... इस बहुत-बहुत में नहीं जाना।
बड़ी दिल को अपनाओ।

दिलशाह बनो दिल शिकस्त नहीं ----- 07 03 1990

जैसे बाप से सम्बन्ध रखना अवश्यक है, ऐसे ईश्वरीय परिवार से सम्बन्ध रखना भी अति अवश्यक है। सारे कल्प में नम्बरवन आत्मा ब्रह्मा बाप और ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध-सम्पर्क में आना है। ऐसे नहीं समझना - अच्छा, बाप तो हमारा है, हम बाप के है। यह भी पास विद ऑनर की निशानी नहीं है। क्योंकि आप

सन्यासी आत्माएं नहीं हो। ऋषि-मुनि की आत्माएं नहीं हो। किनारा करने वाले नहीं हो लेकिन विश्व का सहारा बनने वाली आत्माएं हो। विश्व-किनारा नहीं, विश्व-कल्याणकारी हो। ब्राह्मण-आत्माओं की तो बात छोड़ों लेकिन प्रकृति को भी परिवर्तन करने के सहारे आप हो! परिवार के अविनाशी प्यार के धागे के बीच से निकल नहीं सकते हो। विजयी रत्न प्यार के धागे के बीच से निकल नहीं सकते। इसलिए कभी भी किसी भी बात में, किसी स्थान में, किसी सेवा से, किसी साथी से किनारा करके अपनी अवस्था को अच्छा बनाके दिखाऊं - यह संकल्प नहीं करना। कहते हैं ना - हम इसके

साथ नहीं चल सकते, उसके साथ चलेंगे, इस स्थान पर उन्नति नहीं होगी, दूसरे स्थान पर होगी, इस सेवा में विघ्न है, दूसरी सेवा में अच्छा होगा। यह सब किनारा करने की बातें हैं। अगर एक बार यह आदत आपने में डाली तो यह आदत आपको कहाँ भी टिकने नहीं देगी, बुद्धि को एकाग्र रहने नहीं देगी। क्योंकि बुद्धि को बदलने की आदत पड़ गई। यह भी कमजोरी गिनी जायेगी, उन्नति नहीं गिनी जायेगी। सदैव अपने में शुभ उम्मीदें रखो, नाउम्मीद नहीं बनो। जैसे बाप ने हर बच्चे में शुभ उम्मीदें रखी। कैसे भी हैं, बाप लास्ट नंबर से भी कभी

दिलशिकस्त नहीं बने। सदा ही उम्मीद रखी। तो आप भी न अपने से, न दूसरे से, न सेवा में नाउम्मीद, दिलशिकस्त नहीं बनो। दिलशाह बनो। शाह माना फ्राकदिल, सदा बड़ी दिल।

बाबा बाबा शब्द कहाँ भी भूलो नहीं ---- 03 04 1991

जो सारे खज़ानें सुनाये। गुण भी है बाप की देन। मेरा यह गुण है, मेरी शक्ति है - यह स्वप्न में भी गलती नहीं करना। यह बाप की देन है तो प्रभु देन। परमात्म देन को मेरा मानना - यह महापाप है। कई बार कई बच्चे साधारण भाषा में सोचते

भी हैं और बोलते भी हैं कि मेरे इस गुण को यूज़ नहीं किया जाता, मेरे में यह शक्ति है, मेरी बुद्धि बहुत अच्छी है, इसको यूज़ नहीं किया जाता है। 'मेरी' कहाँ से आई? 'मेरी' कहा और मैली हुई। भक्ति में भी यह शिक्षा 63 जन्मों से देते रहे हैं कि मेरा नहीं मानो, तेरा मानो। लेकिन फिर भी माना नहीं। तो ज्ञान मार्ग में भी कहना तेरा और मानना मेरा - यह ठगी यहाँ नहीं चलती। इसलिए प्रभु प्रसाद को अपना मानना - यह अभिमान और अपमान करना है। ''बाबा-बाबा'' शब्द कहाँ भी भूलो नहीं। बाबा ने शक्ति दी है, बुद्धि दी है, बाबा का कार्य है, बाबा का

सेन्टर है, बाबा की सब चीजें है। ऐसे नहीं समझो - मेरा सेन्टर है, हमने बनाया है, हमारा अधिकार है। 'हमारा' शब्द कहाँ से आया? आपका है क्या? गठरी सम्भाल कर रखी है क्या? कई बच्चे ऐसा नशा दिखाते हैं - हमने सेन्टर का मकान बनाया है तो हमारा अधिकार है। लेकिन बनाया किसका सेन्टर? बाबा का सेन्टर है ना! तो जब बाबा को अर्पण कर दिया तो फिर आपका कहाँ से आया? मेरा कहाँ से आया? जब बुद्धि बदलती है तो कहते हैं - मेरा है। मेरे-मेरे ने ही मैला किया फिर मैला होना है?

जब ब्राह्मण बने तो ब्राह्मण जीवन का बाप से पहला वायदा कौन सा है? नयों ने वायदा किया है, या पुरानों ने किया है? नये भी अभी तो पुराने होकर आये हो ना? निश्चय बुद्धि का फार्म भरकर आये हो ना? तो सबका पहला-पहला वायदा है - तन-मन-धन और बुद्धि सब तेरे। यह वायदा सभी ने किया है?

अंतिम पेपर का क्वेश्चन - नष्टोमोहा

स्मृर्तीस्वरूप ---- 04 12 1991

ओरिजनल तो मधुबन निवासी हो। यह सेवा अर्थ भिन्न-भिन्न स्थान पर गये हो, ब्राह्मण अर्थात् मधुबन निवासी। सेवा स्थान पर गये हो इसीलिए सेवा स्थान को मेरा यही स्थान है - यह कभी भी नहीं समझना। कई बच्चे ऐसे कहते हैं, इसको चेंज करो तो कहते हैं नहीं, हमको पंजाब में वा उड़ीसा में ही भेजो। तो ओरिजनल पंजाब, उड़ीसा के हो वा मधुबन के हो। फिर क्यों कहते हो हम पंजाब के हैं तो पंजाब में ही भेजो, गुजरात के हैं तो गुजरात में ही भेजो? चेंज होने में तैयार हो? टीचर्स सभी तैयार हो? किसी को कहाँ भी चेंज करें, तैयार हैं? देखो, दादी सभी

को सर्टिफिकेट ना का दे रही है। अच्छा यह भी अप्रैल में करेंगे। जो चेंज होने के लिए तैयार हों वही मिलने आवें। सेन्टर पर जाकर सोचेंगे यदि नहीं रहेंगे कि इसका क्या होगा, मेरा क्या होगा..? थोड़ा बहुत कुछ किनारा भी करेंगी। बापदादा से तपस्या की प्राइज़ लेने चाहते हो और बापदादा को तपस्या की प्राइज़ देने भी चाहते हो, या सिर्फ लेने चाहते हो? सभी सेन्टर से सरेन्डर होकर आना। नये मकान में आसक्ति है क्या? मेहनत करके बनाया है ना, जहाँ मेरापन है वहाँ तपस्या किसको कहा जायेगा? तपस्या अर्थात् तेरा और तपस्या भंग होना माना मेरा। समझा - ये तो सब छोटी-छोटी टीचर्स हैं

कहेंगी हर्जा नहीं यहाँ से वहाँ हो जायेंगी। बड़ों को थोड़ा सोचना पड़ता। अच्छा - जो सेन्टर पर आने वाले हैं वो भी सोचते होंगे हमारी टीचर चली जायेगी, आप सभी भी एवररेडी हो? कोई भी कहाँ भी चली जाये। वा कहेंगे हमको तो यही टीचर चाहिए? जो समझते हैं कि कोई भी टीचर मिले उसमें राज़ी हैं वह हाथ उठावें। कोई भी टीचर मिले बापदादा जिम्मेवार है, दादी दीदी जिम्मेवार है, वह हाथ उठायें। अभी ये टी.वी. में तो निकाला है ना। सभी के फोटो टी.वी. में निकाल लो फिर देखेंगे। अन्तिम पेपर का क्वेश्चन ही यह आना है - नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। तो अन्तिम पेपर के लिए तो सभी तैयार

होना ही है । रिहर्सल करेंगे ना, ज़ोन हेड को भी चेंज करेंगे। पाण्डवों को भी चेंज करेंगे। आपका है ही क्या ? बापदादा ने दिया और बापदादा ने लिया। ---- 1994 में सभी टीचर को दो मॉस के लिए दादीजी दवरा बदली का रिहरसल जी कराया ----

सेवा के प्यारे हो, देह और व्यक्तियों के नहीं --

--- 09 01 1993

(जानकी दादी से) अभी कहें कि आप फॉरेन से यहाँ आ जाओ तो बैठ जायेंगी ना! बाप भेजते

हैं, खुद नहीं जाती हो। आखिर तो सभी को यहाँ आना ही पड़ेगा ना! इसलिए बार-बार आते-आते फिर रह जायेंगे। चक्कर लगाकर आ जाते हो ना! इसलिए न्यारे भी हो और सेवा के प्यारे भी। देश और व्यक्तियों के प्यारे नहीं, सेवा के प्यारे।

किनारे को सहारा नहीं बनाना ---- 25 11 1993

नष्टोमोहा, सेन्टर भी याद नहीं आये। (टीचर्स को देखते हुए) ऐसे नहीं कोई जिज्ञासू याद आ

जाये, कोई सेन्टर की वस्तु याद आ जाये, कुछ किनारे किया हुआ याद आ जाये ...। सबसे न्यारे और बाप के प्यारे। पहले से ही किनारे छुटे हुए हों। कोई किनारे को सहारा नहीं बनाना है। सिवाए मंज़िल के और कोई लगाव नहीं हो।

मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है

----- 05 12 1994

प्यारापन का अर्थ है निमित्त भाव, निर्मान भाव। लेकिन इसके बदले मेरेपन का भान आ जाता। ये मेरा ही काम है, मेरा ही स्थान है, मुझे ही सर्व

साधन भाग्य अनुसार मिले हुए हैं, इतनी मेहनत से मैंने ये साधन, स्थान वा सेवा वा सेवा साथी (स्टूडेन्ट्स भी साथी हैं) बनायें हैं। ये मेरा है, क्या मेरी मेहनत की कोई वैल्यू नहीं है? ये निमित्त भाव और मेरेपन के भाव में अन्तर है या एक ही है? ये मेरापन रॉयल रूप से बढ़ गया है। ये मेरेपन की रॉयल भाषा, रॉयल संकल्प बाप से रूहरिहान में भी बापदादा बहुत सुनते हैं। बहुत प्यार से बाप को या निमित्त आत्माओं को मनाने या मनवाने आते हैं-बाबा आप ही इसमें मेरे को मदद करना, आप क्या समझते हो कि ये मेरा काम नहीं है, मेरी जिम्मेदारी नहीं है, मेरा

अधिकार मेरे को ही मिलना चाहिये। बाप को भी ज्ञान देने के लिये बहुत होशियारी करते हैं। बापदादा मुस्कराते रहते हैं। निमित्त हैं, जो मिला, जैसे मिला, जहाँ बिठायेंगे, जो खिलायेंगे, जो करायेंगे वही करेंगे। ये पहला-पहला सभी का वायदा है। वायदा है ना? ये वायदा है या सिर्फ खानेपीने के लिये है? मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है। नये-नये प्रकार के मेरेपन और इमर्ज हो रहे हैं। माया वर्तमान समय नयेनये प्रकार के मेरेपन की छाया डाल रही है। इसलिये समय की समीपता प्रत्यक्ष रूप में नहीं आ रही है। ज्ञानी, चाहे

अज्ञानी, दोनों जानते हैं और कहते भी हैं कि दुनिया की हालतें बहुत खराब है, ये दुनिया कहाँ तक चलेगी, कैसे चलेगी? लेविान फिर भी दुनिया चल रही है। समय की समीपता का फाउण्डेशन है - बेहद की वैराग्य वृत्ति। बापदादा ने चेक किया बेहद की वैराग्य वृत्ति के बजाय नयेनये प्रकार के छोटेछोटे लगाव का विस्तार बहुत बड़ा है। इस विस्तार ने सार को छिपा लिया है। समझा?

धर्मराज बनेगे ----- 25 11 1995

टीचर्स सभी खुश हैं? देखो, मुरली तो नयों के हिसाब से गुह्य है लेकिन बापदादा को डायमण्ड जुबली में सभी से मुक्त कराना ही है। नहीं करेंगे तो धर्मराज बनेंगे। अभी तो प्यार से कह रहे हैं, फिर धर्मराज का साथ लेना पड़ेगा ना। लेकिन क्यों लें? क्यों नहीं बाप के रूप से ही सब मुक्त हो जायें। पुराने-पुराने सोचते हैं कि बापदादा ऐसा कुछ करें ना तो सब ठीक हो जायें। लेकिन बाप नहीं चाहते। बाप को धर्मराज का साथ लेना पसन्द नहीं है। कर क्या नहीं सकता है! एक सेकण्ड में किसी को भी अन्दर ही अन्दर सज़ा दे सकते हैं और वो सेकण्ड की सज़ा बहुत-बहुत तेज़ होती है। लेकिन बापदादा नहीं चाहते। बाप

का रूप प्यारा है, धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा। इसलिए बापदादा को डायमण्ड जुबली में सभी को सब बातों से मुक्त करना ही है। समझा?

लगाव मुक्त बन चक्रवर्ती बनो ---- 18 01 1998

इस ग्रुप को एक बात कहें ? सुनने के लिए तैयार हो? आर्डर करेंगे। आर्डर करें? एवररेडी ग्रुप है ना?

बापदादा को विशेष सेवा में सफलता स्वरूप आत्माओं को देख यह संकल्प आता है कि सेन्टर तो अच्छे जमा दिये हैं। जमा दिये हैं ना या हिलने वाले हैं? अभी इस ग्रुप में से बेहद की सेवा के लिए कोई रत्न निकलने चाहिए। एवररेडी हैं या सेन्टर छोड़ना मुश्किल है? मुश्किल है या सहज है? अभी हाथ उठाओ। आप निकलेंगे तो सेन्टर हिलेंगे क्या? यह भी पक्का हो ना। आप कहो हम तो तैयार हैं सेन्टर हिले या नहीं, हमारा क्या जाता। ऐसा नहीं। बापदादा फिर भी 6 मास का टाइम देते हैं, अपने सेन्टर्स पर ऐसा राइट हैण्ड बनाओ जो

आप चक्रवर्ती बन सको; क्योंकि बापदादा देखते हैं - चक्रवर्ती बनकर सेवा करने वालों से एक ही जगह पर बैठकर सेवा करने वालों का नम्बर थोड़ा पीछे हो जाता है। वह चक्रवती नम्बरवन राजा बन सकते हैं। और यह ग्रुप ऐसा है जो नम्बर आगे ले सकते हैं। तो नम्बर लेंगे?

फिर दादी आर्डर करेगी, एवररेडी। (दादी से) आर्डर करेंगी ना? आपको हैण्डस चाहिए ना? कभी-कभी दादी रूहरिहान करती है - मददगार चाहिए। तो कौन यह फरमाइस पूरी करेंगे?

आप लोग ही कर सकते हैं। बापदादा उम्मींदवार आत्मायें समझते हैं। इसलिए अपने-

अपने स्थान ऐसे पक्के करो, मजबूत बनाओ जो आप जैसे ही चलें, अन्तर नहीं पड़े। ब्रह्मा बाप ने देखा क्या कि पीछे क्या होगा? नहीं देखा ना! अच्छा ही है और अच्छा ही होना है। तो सेकण्ड में लगावमुक्त आत्मा उड़ गई। कोई लगाव ने खींचा नहीं। तो ऐसा ग्रुप बनाओ, कोई लगाव नहीं। मेरी यह ड्युटी है, मेरे बिना कोई कर नहीं सकेगा - यह संकल्प नहीं आवे, इससे भी वैराग्य। तो सुना बापदादा की बात? ध्यान से सुनी। अच्छा - अभी 6 मास में सभी ऐसे सेन्टर पक्का करना, फिर आर्डर होगा।

पसन्द है ना? विश्व महाराजन बनना है कि स्टेट का राजा बनना है? कौन सा राजा बनना है? एक ही सेन्टर सम्भालना तो स्टेट का राजा बनेंगे। चक्रवर्ती बनेंगे तो विश्व के राजा बनेंगे। जैसे आप अनुभवी बने हो वैसे औरों को अनुभवी बनाओ। मुश्किल काम तो नहीं है? मुश्किल हो तो ना कर दें। अगर मुश्किल लगता हो तो बापदादा कहेंगे जहाँ हैं वहाँ ही रहो। यह भी छुट्टी है, जिसकी जो इच्छा हो वह करे, लेकिन बापदादा इस ग्रुप को आगे बढ़ने के उम्मींदवार समझते हैं। ठीक है? पसन्द है? मनाने के पहले फिक्र तो नहीं हो गया? बेफिक्र

बादशाह हैं। जब ब्रह्मा बाप ने कुछ नहीं सोचा, तो फॉलो फादर। बच्चों ने सोचा क्या होगा, कैसे होगा, सेन्टर चलेंगे नहीं चलेंगे, मुरली कहाँ से आयेगी.... कितने क्वेश्चन सोचे, ब्रह्मा बाप ने सोचा? सेकण्ड में व्यक्त से अव्यक्त हो गये। लेकिन और अच्छे ते अच्छा होना ही है, यह निश्चय रहा। और हो रहा है ना? बाकी बापदादा को हर ग्रुप की विशेषता प्यारी लगती है। अच्छा।

अटेंशन प्लीज ---- 21 11 1998

बापदादा अभी से स्पष्ट सुना रहे हैं, अटेन्शन प्लीज़। हर एक ब्राह्मण बच्चे को बाप को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनाना ही है। चाहे किसी भी विधि से, लेकिन बनाना ज़रूर है। जानते हो ना कि विधियाँ क्या हैं? इतने तो चतुर हो ना! तो बनना तो आपको पड़ेगा ही। चाहे चाहो, चाहे नहीं चाहो, बनना तो पड़ेगा ही। फिर क्या करेंगे?

एवररेडी अर्थात ऑर्डर हुआ चला ---- 12 12 1998

क्या सोचते हो - ताली बजेगी उस समय बनेंगे? क्या होगा? बजायें ताली? बोलो तैयार हो? पेपर लेवें? ऐसे थोड़ेही मान जायेंगे, पेपर लेंगे? टीचर्स बताओ - पेपर लें? सब छोड़ना पड़ेगा। मधुबन वालों को मधुबन छोड़ना पड़ेगा, ज्ञान सरोवर वालों को ज्ञान सरोवर, सेन्टर वालों को सेन्टर, विदेश वालों को विदेश, सब छोड़ना पड़ेगा। तो एवररेडी हैं? अगर एवररेडी हो तो हाथ की ताली बजाओ। एवररेडी? पेपर लें? कल एनाउन्समेंट करें? वहाँ जाकर भी नहीं छोड़ना है, वहाँ जाकर

थोड़ा ठीक करके आऊँ, नहीं। जहाँ हूँ, वहाँ हूँ। ऐसे एवररेडी। अपना दफ्तर भी नहीं, खटिया भी नहीं, कमरा भी नहीं, अलमारी भी नहीं। ऐसे नहीं कहना थोड़ा-सा काम है ना, दो दिन करके आयें। नहीं। आर्डर इज़ आर्डर। सोचकर हाँ कहो। नहीं तो कल आर्डर निकलेगा, कहाँ जाना है, कहाँ नहीं जाना है। निकालें आर्डर, तैयार हैं? इतना हिम्मत से हाँ नहीं कह रहे हैं। सोच रहे हैं थोड़ा-सा एक दिन मिल जाये तो अच्छा है। मेरे बिना यह नहीं हो जाए, यह नहीं हो जाए, यह वेस्ट संकल्प भी नहीं करना। ब्रह्मा

बाप ट्रांसफर हुआ तो क्या सोचा कि मेरे बिना क्या होगा? चलेगा, नहीं चलेगा। चलो एक डायरेक्शन तो दे दूं, डायरेक्शन दिया? अपनी सम्पन्न स्थिति द्वारा डायरेक्शन दिया, मुख से नहीं। ऐसे तैयार हो? आर्डर मिला और छोड़ो तो छुटा। हलचल करें? ऐसा करना है - यह बता देते हैं। आर्डर होगा, पूछकर नहीं, तारीख नहीं फिक्स करेंगे। अचानक आर्डर देंगे आ जाओ, बस। इसको कहा जाता है डबल लाइट फरिश्ता। आर्डर हुआ और चला। जैसे मृत्यु का आर्डर होता है फिर क्या सोचते हैं, सेन्टर देखो,

आलमारी देखो, जिज्ञासु देखो, एरिया देखो.....! आजकल तो मेरे-मेरे में एरिया का झमेला ज्यादा हो गया है, मेरी एरिया! विश्वकल्याणकारी की क्या हद की एरिया होती है? यह सब छोड़ना पड़ेगा। यह भी देह का अभिमान है। देह का भान फिर भी हल्की चीज़ है, लेकिन देह का अभिमान यह बहुत सूक्ष्म है। मेरा-मेरा इसको ही देह का अभिमान कहा जाता है। जहाँ मेरा होगा ना वहाँ अभिमान ज़रूर होगा। चाहे अपनी विशेषता प्रति हो, मेरी विशेषता है, मेरा गुण है, मेरी सेवा है, यह सब मेरापन - यह प्रभु प्रसाद है, मेरा नहीं। प्रसाद को

मेरा मानना, यह देह-अभिमान है। यह अभिमान छोड़ना ही सम्पन्न बनना है। इसीलिए जो वर्णन करते हो फरिश्ता अर्थात् न देह अभिमान, न देह-भान, न भिन्न-भिन्न मेरे-पन के रिश्ते हों, फरिश्ता अर्थात् यह हद का रिश्ता खत्म। तो अब क्या तैयारी करेंगे? ब्रह्मा बाप का आवाज़ अटेन्शन से सुनो, आह्वान कर रहे हैं। बाप कहते हैं समाप्ति का नगाड़ा बजाना तो बहुत सहज है, जब चाहें तब बजा सकते हैं लेकिन कम-से-कम सतयुग आदि के 9 लाख तो एवररेडी हो ना! चाहे नम्बरवार हों, नम्बरवन तो थोड़े होंगे। कम से कम 108 नम्बरवन, 16 हज़ार नम्बर टू, 9

लाख नम्बर थ्री। लेकिन इतने तो तैयार हो जाएँ। राजधानी तो तैयार होनी चाहिए।

यह भी मजा है ना ----- 12 12 1998

एक बारी सबको चेंज़ करना ज़रूर है। अभी इत्तला कर रहे हैं तो एवररेडी हो जाना फिर आर्डर करेंगे। मधुबन वालों को भी चेंज़ करेंगे। मधुबन वाले सेन्टरों में जायें, सेन्टर वाले मधुबन में आयें। अपनी अलमारियाँ खाली कर देना। कोई को ताला लगाने नहीं देंगे। अच्छा - यह भी मज़ा है ना। यह भी मज़े का खेल है।

कंडीशन डालेगा ----- 19 03 2000

लास्ट में होमवर्क तो देंगे ना! कुछ तो होम वर्क मिलेगा ना! तो बापदादा आने वाली सीज़न में आयेगा लेकिन.... कन्डीशन डालेगा। देखो साकार का पार्ट भी चला, अव्यक्त पार्ट भी चला, इतना समय अव्यक्त पार्ट चलने का स्वप्न में भी नहीं था। तो दोनों पार्ट ड्रामानुसार चले। अब कोई तो कन्डीशन डालनी पड़ेगी या नहीं! क्या राय है? क्या ऐसे ही चलता रहेगा? क्यों? आज वतन में प्रोग्राम भी पूछा। तो बापदादा की रूहरिहान में यह भी चला कि यह ड्रामा का पार्ट कब तक?

धमर्राज का पार्ट चला तो ----- 04 11 2001

हद की बातों में, हद के संस्कारों में समय नहीं गंवाओ। बापदादा आज भी सभी बच्चों को, चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे सेन्टर्स पर बैठे हैं, चाहे देश में हैं, चाहे विदेश में हैं लेकिन रहमदिल भावना से इशारा दे रहे हैं – बापदादा हर बच्चे की हद की बातें, हद के स्वभाव-संस्कार, नटखट वा चतुराई के संस्कार, अलबेलेपन के संस्कार बहुत समय से देख रहे हैं, कई बच्चे

समझते हैं सब चल रहा है, कौन देखता है, कौन जानता है लेकिन अभी तक बापदादा रहमदिल है, इसलिए देखते हुए भी, सुनते हुए भी रहम कर रहा है। लेकिन बापदादा पूछते हैं आखिर भी रहमदिल कब तक? कब तक? क्या और टाइम चाहिए? बाप से समय भी पूछता है, आखिर कब तक? प्रकृति भी पूछती है। जवाब दो आप। जवाब दो। अभी तो सिर्फ बाप का रूप चल रहा है, शिक्षक और सतगुरू तो है ही। लेकिन बाप का रूप चल रहा है। क्षमा के सागर का पार्ट चल रहा है। लेकिन धर्मराज़ का पार्ट चला तो? क्या करेंगे? बापदादा यही

चाहते हैं कि धर्मराज़ के पार्ट में भी वाह! बच्चे वाह! का आवाज कानों में गूंजे। फिर बाप को उलहना नहीं देना। बाबा, आपने सुनाया नहीं, हम तैयार हो जाते थे ना! इसलिए अभी हद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव में, संस्कारों में समय नहीं गंवाओ। चल रहे हैं, चलता है, नहीं, जमा होता जाता है। दुगुना, तीगुना, सौगुना जमा होता जाता है, चलता बाप को राज़ी करने की विधि है - राज़युक्त होकर चलना है नहीं। इसलिए इस दृढ़ संकल्प का दिल में दीप जगाओ। हद से बेहद में वृत्ति, दृष्टि, कृति बनानी ही है। इसीलिए बापदादा कहते हैं बनानी

पड़ेगी। आज यह कह रहे हैं बनानी पड़ेगी फिर क्या कहेंगे? टू लेट। समय को देखो, सेवा को देखो, सेवा बढ़ रही है, समय आगे दौड़ रहा है। लेकिन स्वयं हद में हैं या बेहद में हैं? हद की बातों के पीछे आप नहीं दौड़ो। तो बेहद की वृत्ति, स्वमान की स्थिति आपके पीछे दौड़ेगी।

१६ हजार तो एवररेडी हो ----- 28 02 2003

ऐसे सभी एवररेडी, कम से कम 16 हजार तो एवररेडी हों, 9 लाख छोड़ो, उसको भी छोड़ दो। 16 हजार तो तैयार हों? हैं तैयार? बजायें

ताली? ऐसे ही हाँ नहीं करना। एवररेडी हो जाओ तो बापदादा टच करेगा, ताली बजायेगा, प्रकृति अपना काम शुरू करेगी। साइंस वाले अपना काम शुरू कर देंगे। क्या देरी है, सब रेडी हैं। 16 हजार तैयार हैं? हैं तैयार? हो जायेंगे। (आपको ज्यादा पता है) यह जवाब तो छुड़ाने का है। 16 हजार की रिपोर्ट आनी चाहिए एवररेडी, सम्पूर्ण पवित्रता से सम्पन्न हो गये।

बापदादा को ताली बजाने में कोई देरी नहीं है। डेट बताओ। (आप डेट दो) सभी से पूछो। देखो

होना तो है ही लेकिन जो सुनाया एक `मैं' शब्द का सम्पूर्ण परिवर्तन, तब बाप के साथ चलेंगे। नहीं तो पीछे-पीछे चलना पड़ेगा। बापदादा इसीलिए अभी गेट नहीं खोलते हैं क्योंकि साथ चलना है।

संगठन की शक्ति ---- 17 03 2003

अभी बापदादा ने प्लैन बनाया है दिल में, अभी दिया नहीं है। तो जो सेवा के, ब्रह्मा बाबा के साकार समय में सेवा में आदि रत्न निकले हैं, उन्हों का संगठन पक्का करना है। (कब करेंगे?)

जब आप करो। यह ड्युटी आपकी (दादी जानकी की) है। आपके दिल का संकल्प भी है ना? क्योंकि जैसे आप दादियों का एकता और दृढ़ता का संगठन पक्का है, ऐसे आदि सेवा के रत्नों का संगठन पक्का हो, इसकी बहुत-बहुत आवश्यकता है क्योंकि सेवा तो बढ़नी ही है। तो संगठन की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। संगठन की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव। पांच हैं लेकिन संगठन की निशानी है। अच्छा - अभी जो साकार ब्रह्मा के होते हुए सेवा के लिए सेन्टर पर रहे हैं, सेवा में लगे हैं, वह उठो। भाई भी हैं, पाण्डवों के बिना थोड़े ही गति है। यहाँ तो थोड़े हैं लेकिन और भी हैं।

संगठन को जमा करने की जिम्मेवारी इनकी (दादी जानकी की) है, यह (दादी) तो बैकबोन है।लास्ट अन्तिम पेपर सभी ब्राह्मणों का यही छोटा-सा है - ''नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप।``

ऑडर आएगा आ जाओ ----- 17 10 2003

सोचने वाले नहीं बनना, निभाने वाले। जब मेरा कह दिया, मेरा बाबा और बाबा ने भी कहा मेरा बच्चा, पक्का सौदा हो गया ना! दादियां ठीक है? फारेनर्स को देखके खुशी हो रही है ना!

बहुत खुशी। दादी को तो बहुत उमंग आता है। अगर कुछ हो सके ना, तो दादी सबको यहाँ ही बिठा देवे। यह सब हाजिर हैं कि सोचेंगे, लण्डन के डायमण्ड हॉल का क्या होगा? नहीं, यह सब एवररेडी हैं। अगर बापदादा आर्डर करे आ जाओ, कुछ भी सोचो नहीं, सेवा को, सेन्टर को, साथियों को कुछ नहीं सोचो, आ जाओ, तो आ जायेंगे? (हाँ जी) अच्छा है। वह भी दिन आयेगा, आर्डर आयेगा आ जाओ क्योंकि बाप का प्यार है ना, तो अलग-अलग नहीं करके, साथ चलेंगे। जो पक्के होंगे वह रहेंगे।

दादियों के समान सेवा के आदि रत्न भी जिम्मेवार है ---- 30 11 2003

आदि पुरानी बड़ी बहिनों से:- सभी अपने को जिम्मेवार समझते हो? तो आप सबके ऊपर बेहद की जिम्मेवारी है। सिर्फ पंजाब, गुजरात, बॉम्बे नहीं, बेहद की जैसे दादियाँ हैं ना, तो बेहद में हैं ना। ऐसे निमित्त कहाँ के भी हो लेकिन सदा बेहद की जिम्मेवारी अपने ऊपर समझो। कोई भी समय कहाँ भी आवश्यकता हो तो एवररेडी हो। जैसे दादियाँ हैं वैसे आपका भी ग्रुप है। अभी कोई हैं, कोई नहीं हैं, लेकिन

ऐसा सेकण्ड ग्रुप भी बहुत बुद्धिवान है, सर्विसएबुल है, बहुत काम कर सकते हैं। तो ये सदा समझो कि हम बेहद के हैं, हद के नहीं। तो एवररेडी हो? कोई समय भी बुलाया तो आ जायेंगी! या कहेंगी जोन का बहुत बड़ा काम है, तबियत नहीं ठीक है! नहीं। तबियत को बापदादा आपेही चलायेगा। कोई भी जिम्मेवार हो, बापदादा की नजर में हैं इसीलिए खास बुलाया है।

लास्ट पेपर में नंबरवन आने की विधि ---- 30 11 2005

समय की समीपता को देखते अपने को देखो - सेकण्ड में सर्व बन्धनों से मुक्त हो सकते हो?

कोई भी ऐसा बन्धन रहा हुआ तो नहीं है?

क्योंकि लास्ट पेपर में नम्बरवन होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है, सेकण्ड में जहाँ, जैसे मन-बुद्धि को लगाने चाहो वहाँ सेकण्ड में लग जाये। हलचल में नहीं आये।

उन्हों से ही बापदादा मिलेंगे ----- 28 03 2006

अब प्रैक्टिकल करके दिखाना। फिर बापदादा आयेगा। अभी टीचर बनेगा। ऐसे नहीं आयेगा।

तो जो लिखेंगे एवररेडी, उन्हों से बापदादा मिलेंगे, औरों से नहीं। चाहे मधुबन में हो चाहे कहाँ भी हो। ठीक है? मधुबन वाले ठीक है?

डबल फॉरेनर्स तो एवररेडी होंगे ना! बापदादा सबका सम्पन्न स्वरूप देखेगा। एवररेडी होंगे?

एक - नष्टोमोहा, दूसरा - एवररेडी ---- 15 12 2007

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि समय की रफ्तार बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। समय की गति को जानने वाले अपने को चेक करो कि मास्टर सर्वशक्तिवान हमारी गति तीव्र है? पुरूषार्थ तो सब कर रहे हैं लेकिन बापदादा क्या देखने चाहते? हर बच्चा तीव्र पुरूषार्थी, हर सबजेक्ट में पास विद आनर है वा सिर्फ पास है? तीव्र पुरूषार्थी के लक्षण विशेष दो हैं - एक - नष्टोमोहा, दूसरा - एवररेडी। सबसे पहले नष्टोमोहा, इस देहभान, देह-अभिमान से है तो

और बातों में नष्टोमोहा होना कोई मुश्किल नहीं है। देह-भान की निशानी है वेस्ट, व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय, यह चेकिंग स्वयं ही अच्छी तरह से कर सकते हो। साधारण समय वह भी नष्टोमोहा होने नहीं देता। तो चेक करो हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर कर्म, सफल हुआ? क्योंकि संगमयुग पर विशेष बाप का वरदान है, सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। तो अधिकार सहज अनुभूति कराता है। और एवररेडी, एवररेडी का अर्थ है- मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में समय का आर्डर हो अचानक तो एवररेडी और अचानक ही होना है। जैसे

अपनी दादी को देखा अचानक एवररेडी। हर स्वभाव में, हर कार्य में इजी रहे हैं। सम्पर्क में इजी, स्वभाव में इजी, सेवा में इजी, सन्तुष्ट करने में इजी, सन्तुष्ट रहने में इजी। इसीलिए बापदादा समय की समीपता का बार-बार इशारा दे रहा है। तो एवररेडी हो ना? कल भी कुछ हो जाए, एवररेडी हैं? पहली लाइन एवररेडी है? कल भी हो जाए तो? टीचर्स तैयार हैं तो अच्छा। यह वर्ग वाले तैयार हैं। जितने भी वर्ग आये हो, एवररेडी। सोचना। देखना दादियां, देख रही हो सब हाथ हिला रहे हैं।

अच्छा है, मुबारक हो। अगर नहीं भी हैं ना तो आज की रात तक हो जाना। क्योंकि समय आपका इन्तजार कर रहा है। बापदादा मुक्ति का गेट खोलने का इन्जार कर रहा है। एडवांस पार्टी आपका आह्वान कर रही है। आपको भिन्न भिन्न देश में सेवा के लिए भेजा गया है। परमानेंट एड्रेस आपकी कौन सी है? पता है। परमानेंट एड्रेस कौन सी? मधुबन कि लण्डन अमेरिका? मधुबन है? बोलो, परमानेंट एड्रेस मधबन है, पक्का है? सेवा के लिए गये हो। घर मधबन है, सेवा स्थान अलग-अलग है।

करावनहार करा रहा है ---- 05 03 2008

मैं आत्मा यह कर रही हूँ। मैं और मेरा, हद का बदल बेहद का हो जाए। हो सकता है? हो सकता है? कांध तो हिलाओ। आदत डालो, मैं, फौरन आवे आत्मा। और जब मैं-पन आता है तो एक शब्द याद आवे - करावनहार कौन? बाप करावनहार करा रहा है। करावनहार शब्द करने के समय सदा याद रहे। मैं-पन नहीं आयेगा। मेरा विचार, मेरी ड्युटी, ड्युटी का भी बहुत नशा होता है। मेरी ड्युटी... लेकिन देने

वाला दाता कौन! यह ड्युटीज प्रभु की देन हैं।

प्रभु की देन को मैं मानना, सोचो अच्छा है?

स्थान बापदादा ने दिए है ------ 18 03 2008

बापदादा ने सुना - कि जहाँ बापदादा ने बच्चों को सेवा करने के लिए गिफ्ट में स्थान बनाके दिया है, चाहे दिल्ली ओ.आर.सी. में, चाहे हैदराबाद में,

एवररेडी ---- 02 04 2008

बाप का इशारा समय प्रति समय प्रैक्टिकल देख रहे हो - अचानक एवररेडी। क्या दादी के लिए सोचा था कि जा सकती है? अचानक का खेल देखा ना। तो इस वर्ष एवररेडी।

एवररेडी ---- 20 10 2008

बापदादा ने कई बार इशारा दिया है की समय अचानक और नाजुक आ रहा है इसलिए एवररेडी ----

एवररेडी ---- 15 12 2008

तीन शब्द बापदादा के सदा याद रखो -- १- अचानक २ एवररेडी ३ बहुतकाल -- यह तीनों शब्द सदा बुद्धि में रखो

एवररेडी ---- 22 02 2009

तीन शब्द बापदादा समय प्रति समय याद दिलाता है – 1 अचानक 2 एवररेडी और 3 बहुत समय का खाता जमा –

एवररेडी ---- 09 03 2009

आप सभी जानते भी हो, कहते भी हो एवररेडी -- तो सम्पन और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी है ???

एवररेडी ---- 07 04 2009

बापदादा ने समय प्रति समय इशारा तो दे दिया है लेकिन आज विशेष बापदादा एक तो बेहद के वैराग्य तरफ इशारा दे रहा है ---- तो सेवा करो लेकिन सेवा के साथ साथ अपनी बेहद के वैराग्य की चेकिंग भी जरूर रखना ---

सीजन के बापदादा के महावाक्य

अचानक एवररेडी २५ १० २००९ से ३१ ०३ २०१०

२५ १० २००९ ----- बापदादा ने पहले से ही कहा है की अचानक क्या भी हो सकता है --- इसलिए संदेश देने का अपने प्रागेस का अभी अभी, कभीकभी नहीं ---- बेहद का वैराग्य, गेस्ट हाउस में दिल भी लगती --- जाना है जाना है -- याद रहता है --- तो बेहद का वैराग्य ----- अभी लक्ष्य रखो बेहद के वैरागी ---- अभी एवररेडी ग्रुप बनाओ ----वह सभी desh आपस

में राय क्र प्रोग्राम बनाये की ham सभी निर्विध्न रहेंगे --- एवररेडी रहेंगे --- सेवा के लिए ेवररेडी --- अभी तो समय अनुसार आप लोगो को alrt होना पड़ेगा

१५ ११ २००९ ----- इतना इस समय की वैल्यू है क्योंकि बापदादा ने कह दिया है की अचानक किसी भी समय आपने फाइनल पेपर होगा ---- बापदादा बह बताएंगे नहीं इसलिए इस समय का अटेंशन सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाना है ------

३० ११ २००९ ----- तो बापदादा अभी क्या कहते है ???? हर बच्चा, क्योंकि बापदादा कुछ समय से लेके वॉर्निंग दे रहे है समय की --- हर बच्चे की पढाई की रिजल्ट का समय अचानकर आना है ----इसके लिए सदा एवररेडी --- अचानक अगर फाइनल पेपर का टाइम आ गया तो ------ साधारण पुरुषार्थी एवररेडी बनने में समय लगा देगा ---- क्योंकि अभी बापदादा सभी जो भी स्टूडेंट है, हर एक स्टूडेंट को अभी पहले यह १५ दिन की रिहरसल करके कुछ समय कराने, हाथ उठायें , एवररेडी --- अभी बापदादा यही चाहते है की देश व विदेश का हर बच्चे एवररेडी सदा रहे --- जैसे अच्छे स्टूडेंट जो होते है पढाई में व: सदा यही इन्तजार करते है

की जल्दी जल्दी इम्तहान हो, ऐसे ही हर बच्चा ऐसा एवररेडी हो की कल bhi कुछ हो जाए तो एवररेडी --- सब सब्जेक्ट में, चार ही सब्जेक्ट में एवररेडी ---- समय आया और पास विद ऑनर बना ----

१५ १२ २००९ ------- अच्छा ठीक है --- पेपर ले???? हाथ उठाओ --- अच्छा परिवार में पास पास हो???? परिवार के सबंध में आना, क्योंकि परिवार को छोड़ तो कहाँ जायेंगे नहीं, रहना ही है --- निभाना ही है ---- तो इसमें पास हो ????? --- अब बताना ऑडर करें ??? --- बच्चे अगर एवररेडी नहीं है तो माया और प्रकुर्ति

को ऑडर करे??? --- करे??? --- हाथ उठाओ --- तैयार है ???? --- aese नहीं हाथ उठाओ -- - पेपर आएगा ---- आएगा पेपर --- एवररेडी ???? ----- सेंटर के कनेक्शन जो है vah भी ek जाए तो उस jon ko sahar को भी बापदादा इनाम देगा ------ क्या नहीं कर सकते है ???? -- लेकिन करना पड़ेगा --- ठीक है ना - -- पसंद है ??? --- सभी को पसंद है ??? लेकिन बापदादा के इस सीजन के पहले सीजन में तीन चार बार कहते है, कोई की भी अभी तक रिजल्ट नहीं आई है --- क्या यह समझते हो की यह भी बात अचानक होनी है ??? --- चलो अचानकर हो भी जाए ---- तो इस बेहद के नाटक में नंबरवन आना ही है -- यह पक्का है ना

!!!! -- आना ही है , बनना ही है, चाहे कुछ भी karna पड़े, एवररेडी ------- है एवररेडी ???

कुछ भी करना पड़े तो एवररेडी ----- अभी जल्दी जल्दी करो ----- अचानक कुछ भी हो सकता है ----- अभी इस ड्रील से सभी को सदा के लिए अपने पुरुषार्थ की गति तीव्र करनी है क्योंकि बहुतकाल का भी सबंध है ---- इसलिए सभी अटेंशन दे मुझे करना है, koi करे नहीं करे, लेकिन मुझे एवररेडी बनना ही है ------

३१ १२ २००९ ------ बापदादा का यह महावाक्य कुछ समय से चल रहा है की अचानक होना है --- तो अचानक होना है ---

और अगर बहुत समय का अभ्यास नहीं होगा तो बताओ अचानक के samy अभ्यास की आवश्यकता है ना !!!! ---- तो सोचो, अगर १० minit का अभ्यास का नहीं हो सकता तो अचानक में उस समय कया करेंगे ???? ----

१८ ०१ २०१० ------ अचानक कुछ भी हो सकता है ---- कल कुछ भी हो जाए लेकिन मुझे एवररेडी रहना ही है ---- तो इतनी तैयारी सबके अटेंशन में है ???? अपना karmo का हिसाब चुक्तु किया है ??? ----- पूरा बेहद के वैराग्य का अनुभव चेक किया है ??? --- अपनी दिल में यह चेक किया है की एवररेडी है ???? ----

नष्टोमोहा स्मुर्तीस्वरूप ---- अचानक अशरीरी बनने का अभ्यास अशरीरी बनाकर उड़ गए ---- कोई ने समझा की ब्रह्मा बाप जाने वाले है !!! --- लेकिन नष्टोमोहा, बच्चों के हाथ में हाथ होते कहाँ आकर्षण रही ??? ----- ऐसे पूरा वर्सा लेने वाले यही लक्ष्य बुद्धि में रखो की अचानक एवररेडी और बहुत समय, तीनों ही शब्द साथ में याद रखो ----- इसलिए बापदादा के सभी ashaon के दीपक बच्चों प्रति यही वरदान है की सदा यह तीनों ही शब्द याद रखकर सभी आशाओं के दीपक बनने का प्रत्यक्ष सबूत दिखाओ ---- तो आप सभी एवररेडी हो, कहाँ भी बुलावा हो तो सेवा दे सकते हो???? -----

३० ०१ २०१० ------ इसलिए अभी समय प्रमाण सब अचानक होना है --- बताके नहीं होना है --- जैसे अभी प्रकुर्ति का अचानक बातों का खेल चल रहा है ---- आरंम्भ हुआ है अभी --- नई नई बातें अचानक अर्थक्वेक हुआ, थोड़े समय में लाखो आत्माएं चली गई, क्या उन्हों को पता था की कल हम होंगे या नहीं ????? ऐसे की एक्सीडेंट, भिन्न भिन्न स्थान पर अचानकर होना आरम्भ हो गया है ----- इकट्ठे के इकठ्टे एक समय अनेकों की टिकट कट रही है तो ऐसे समय में आप एवररेडी है ???? यह तो नहीं कहेंगे की पुरुषार्थ कर रहा हूँ ???? एवररेडी अर्थात कोई भी वरदान या स्वमान का संकल्प

किया और स्वरूप बना ---- तो पूछते है एडवांस पार्टी वाले और बापदादा भी कहते है की आखिर भी सभी निराकारी फ़रिश्ते स्वरूप में कब एवररेडी होंगे !!!!! --- आजकल प्रकुर्ति भी बहुत पुकारती है --- बोझ बहुत बढ़ता जाता है - --- मन का भी, शरीरों का भी ---- इसलिए सभी आपका आह्वान कर रहे है ---- अब थोड़ा थोड़ा अपना एवररेडी का नजारा दिखाओ ---- वह नजारा है ज्यादा में ज्यादा समय या फ़रिश्ता रूप या निराकारी रूप, प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष करो अपना ------ आगे पीछे नहीं जाना है --- पहले यहां एवररेडी का रूप प्रत्यक्ष होना है ---- जिससे प्रत्यक्षता हो बापदादा KEE , कार्य की --- तो अभी तीव्र पुरुषार्थ करो ---- एक दो

को सहयोग दो --- आगे बढ़ाओ --- कमजोर को सहारा दो --- ऐसा संगठन बनाओ ----

11 02 2010 ------ क्योंकि बापदादा चाहते है की अभी अचानकत सरकमस्टांश ऐसे बनेगे जो दु:ख और अशांति कारण ऐसे बनेगे जो आप सबको आत्माओं पर रहम आएगा -----

२८ ०२ २०१० ------ बापदादा ने दो बातें बार बार अटेंशन में दी है एक अचानक और दूसरा बहुत काल का पुरुषार्थ जमा जाना चाहिए -----

१५ ०३ २०१० ----- क्योंकि बापदादा के पास पुकार और दु:ख की आह बहुत सुनाई देती है ---- आपके पास पता नहीं क्यों नहीं सुनाई देती है ---- बापदादा जब ऐसे सुनते रहते है तो आप बच्चों को जो अपने को वारिस समझते है, वर्सा लेने वाले है , तो वर्सा लेने वाले को दूसरों को वर्सा दिलाने के ऊपर रहम आना चाहिए ना ---- रहम क्यों नहीं आता ??? --- वैराग्य - बेहद का वैराग्य और रहम आना चाहिए --- बापदादा ने अचानक का समय बहुतकला से बताया है ---- - इसलिए सब अचानक होना है --- तो अभी वारिस क़्वालिटी, वर्सा दिलाना, रहमदिल बनने पार्ट बजाओ ---- ऐसे नहीं सोचना कब तक

होगा !!!! -- अचानक होगा --- इसलिए व्यर्थ को समाप्त करना ही है --- होना है नहीं ---- करना ही है ----- हम सब एक है --- यह तो सेवा के कारण, कोई देखरेख हो सके इसके कारण जॉन बनाया है ---- बाकि एक ही है --- एक ही रहेंगे --- एक के है --- एक के रहेंगे ------

३१ ०३ २०११० ------- इसलिए बापदादा यही चाहते है की अगले बारी जब आये पहले बारी --- आप सोच रहे होंगे बाप ने तो कह दिया कब तक चलेगा??? --- इसका मतलब यह है की आप एवररेडी रहो ----

सीजन के बापदादा के महावाक्य ---- अचानक एवररेडी --- २४ १० २०१० ---- १३ ०४ २०११

१५ ११ २०१० -----वास्तव में देखो आप जो सरेंडर हुए, सरेंडर होने वाले हाथ उठाओ, जो सरेंडर है वह हाथ उठाओ ---- जब सरेंडर किया तो क्या संकल्प किया???? ---- तन मन धन सब बाप आपका --- ऐसे किया ना !!!! --- किया --- किया था ??? --- इसमें हाथ उठा- -- - तो अभी सरेंडर किया मेरा नहीं, तन भी मेरा नहीं, धन भी मेरा नहीं, जैसे ब्रह्मा बाप ने बाप को सेवार्थ शरीर - -तो ब्राह्मण बाप जानते थे की यह शरीर मेरा नहीं, सेवार्थ है ---- तो जब अपने तन मन धन तीनों अर्पण किया तो

आपका शरीरी बाप के सेवार्थ निमित है ---- जैसे ब्रह्मा बाप का शरीर सेवा अर्थ रहा ---- तो अपना शरीरी आपका नहीं है --- सेवार्थ है ---- तो यह जो संस्कार है देहअभिमान व देहभान का, यह होना चाहिए ??--- अगर यह स्मुर्ती में रखो की यह तन विश्व सेवा अर्थ है --- मेरा नहीं है. बाप ने आपको सेवार्थ दिया है --- तो देहभान व देह अभिमान --- देह अभिमानी ज्यादा नकशान करता है --- देहभान उससे हल्का है ---- लेकिन दोनों जब दे दिया -- फार्म भरते हो तो क्या लिखते हो??? ---- टीचर फार्म भराती है न -- तो क्या भराती हो ??? --- की यह मेरा जीवन अभी सेवा प्रति है -----अभी जैसे वृद्धि हुई है वैसे तीव्र पुरुषार्थ की विधि

उसकी भी चारों और लहर फैलाओ --- नंबर ले लो --- संस्कार समाप्ति का नंबर ले लो --- ले सकते हो ?? जो समझते है हम पहला नंबर ले सकते है -- वह हाथ उठाओ -- अच्छा है -- ऐसा आपस में संगठन करके प्रोगाम बनाओ --- सब एक है --- भिन्न भिन्न स्थान है लेकिन है एक --- यह कमाल करके दिखाओ --- है ना हिम्मत ??? - हिम्मत है ??? ---

३० ११ २०१० ----- अभी जल्दी जल्दी कदम को आगे करना, क्यों ??? ---- अचानक क्या भी हो सकता है ---- तारीख नहीं बताएंगे -----

१५ १२ २०१० ------ इसलिए बापदादा यही सदा हर बच्चों को शिक्षा देते है , सदा मौज में रहना बहुत सहज है ---- क्या सहज है ??? ---- सिर्फ हद का मेरापन बाप को दे दो ---- मेरे से तेरा किया तो बेफिक्र बादशाह बन गए ----- और अभी हर एक समझे की हमें नंबर लेना है --- लेना है ??? --- लेना है तो मुख्य इतने लोग जो उठते है वह अपने अपने सेन्टरको, एक एक अपने एरिया को अटेंशन देकर नई दुनिया में जाने की तैयारी कर सकते हो --- वहां तो राजा, प्रजा सब एक होंगे, निर्विध्न होंगे, लेकिन संस्कार वहां तो नहीं भरेंगे, यहाँ ही भरना है ---- तो बापदादा सभी को छोटा जॉन है या बड़ा जॉन है, यह रिजल्ट देखने चाहते है --- बोलो,

निमित बनी हु दादियां या दादे यह पहला इनाम कौन लेगा ????? ----- कुछ समय पहले जब दादी थी तो एक बारी सभी ने पाठ पक्का किया था हाजी का --- ना शब्द नहीं, हाजी बहुत अच्छा ----- हाजी, मीठी आत्मा, यह सबका पाठ पक्का है ---- पक्का है ना ??? --- इनाम तो मधुबन को लेना चाहिए ---- सकते हो ना !!!!

१८ ०१ २०११ ------- मधुबन हर के बच्चे का घर है ----- यह तो सेवा अर्थ भिन्न भिन्न स्थान में भेजा गया है --- सेवक बनना है ना -----

लेकिन शुभभावना और शुभकामना सेवा की रखेंगे तो सेवा से बल मिलता है ---- आपको भी ख़ुशी होगी और जिस कार्य के प्रति करते हो उस कार्य में आने वाली आत्माओं को भी ख़ुशी की प्राप्ति होगी --- तो बहुत अच्छा, --- जो भी सेवा करते हो बापदादा के यज्ञ की सेवा करते हो ----- यज्ञ की सेवा करें में बहुत पुण्य है ---

१७ ०२ २०११ ------ समय पर तैयार हो जायेंगे ??? ---- हो रहे है, होना ही है ---- इसके बजाए अभी एवररेडी बन सकते है ??? --- क्यों??? -- - एवररेडी रहें का अभ्यास मायाजीत मनजीत

जगतजीत यह संस्कार भी बहुत समय से बनाएंगे तब अंत समय भी यह बहुतकाल का अभ्यास विजयी बनाकर आपको विशेष माला का मनका बनाएगी --- पास विद ऑनर बनेगे - --- पास नहीं, --- पास विद ऑनर --- तो बोलो -- यह हिम्मत है ना !!!! ---- पास विद ऑनर तो होना है ना ??? --- जो द्रापर से लेके अब तक पूज्य बनते है अर्थात माला के मनके बनते है तो अपने को माला के मनके बनाने का शुद्ध संकल्प है ना !!!! ----

०२ ०३ २०११ ----- आप बाप के ऊपर बलिहार गए---- बलि चढ़े गए --- पूर्ण सरेंडर हो

गए तो उन्होंने भी कॉपी की है लेकिन अपने को नहीं करते, -- अपने को बलि नहीं चढ़ाते है ---- किसको चढ़ाते है ???? ---- जानते हो ना !!!! -- बकरे को चढ़ाते है ---- बकरे को क्यों ढूढ़ा और किसको नहीं ढूंढा --- सब हंस रहे है --- जानते हो --- जो बाप आप बच्चों को बार बार इशारा देता है मैं pan छोड़ निमित भाव dharn करो तो उन्हों ने भी बकरे को ढूंढा है क्योंकि वह भी मैं मैं करता है ------ ---- तो बाप इशारा देते रहते है की मैं और मेरा, सदा मेरा बाबा --- usi तरह दिल का लगाव हो ---- हद का मेरा -- मेरानाम मेराशान इसको समाप्त कर मैं बाबा का बाबामेरा --- कितनी ख़ुशी होती है --- भगवान मेरा हो गया और क्या चाहिए !!!! ---- तो एक

साधारण मेरा, --- एक है महीन मेरा ---- यह महीन मेरा मैला कर देती ---- और मेरा बाबा मालामाला kar देता है ----- पहले यज्ञ फिर सेंटर ---- अटेंशन देते तो है --- बापदादा जानते है कौन कौन किस प्रकार से अटेंशन दे रहे है और बढ़ रहे है ----- बापदादा सिर्फ इशारा दे रहा है -------- तो बीज आपका व्ही है --- सिर्फ सेवा के प्रति इतनी भाषाएँ कौन सीखेगा !!!! -- -- एक बारी में कितने देशों से आते है ---- अभी इतनी भाषाएँ कौन सीखेगा ?? --- इसलिए आपको भेजा है सेवा के लिए ___ असली भारत के है ----

१६ ०३ २०११ ------- कितना समय जो ब्राह्मण परिवार में कहाँ भी कभी भी संस्कार अपना कार्य नहीं करे ----- चाहे मेरा संस्कार --- चाहे दूसरे का संस्कार भी --- मेरे को प्रभाव नहीं डाले ---- यह डेट फिक्स हो सकती है????? -- -- हो सकती है ???? --- हाथ उठाओ --- अच्छा, सभी का फॉलो निकाला !!!!! --- क्योंकि जैसे यह अचानक सिन देखि ना !!!!! -- - ऐसे सब अचानक ही होना है ----- इसलिए बापदादा तैयारी तो देखेंगे ना !!!! -------

१३ ०४ २०११ ------ आपके सेवास्थान का वायुमंडल ऐसा बनाये जो भी आवे वह पहले

तो वायुमंडल की आकर्षण में आ जाएँ क्योंकि आजकल यही चाहते है की ऐसे कोई कार्य हो जो आने से ही अनुभव हो कुछ ---- देखने से ही अनुभव हो कुछ ----- सुनने का अनुभव होता है ------ योग का अनुभव होता है ---- लेकिन वायुमंडल का भी अनुभव हो ---- यह अटेंशन निमित बनी हुई आत्माओं को रखना उनकी विशेष सेवा है ------ स्वयं अगर योगयुक्त बन वायुमंडल में ठीक स्थिति में रहते है तो उनका प्रभाव सेवा स्थान पर ऑटोमेटिकली पड़ता है ---- जैसे बापदादा वा बड़े आत्माएं का वायुमंडल वायब्रेशन पड़ता है ना ---- बापदादा ka वायुमंडल बदलता है ना ---- तो हर बच्चे को वायुमंडल बनाने का --- क्योंकि अभी सेंटर

का वायुमडंल बदलेंगे तब संसार का वायुमंडल बदलेगा ---- -- निमित आपके सेवा स्थान से -- ---- तो अगली सीजन में जब आएंगे तो क्या खुशखबरी सुनाएंगे ???? --- संस्कार का संस्कार हो गया ??? ---- रेडी ??? --- रेडी है ??? --- अभी साकार में देखेंगे -------